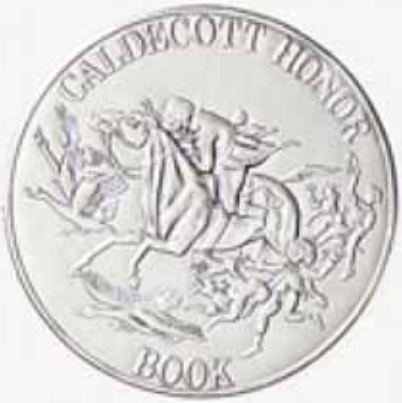

Frederick

Leo Lionni

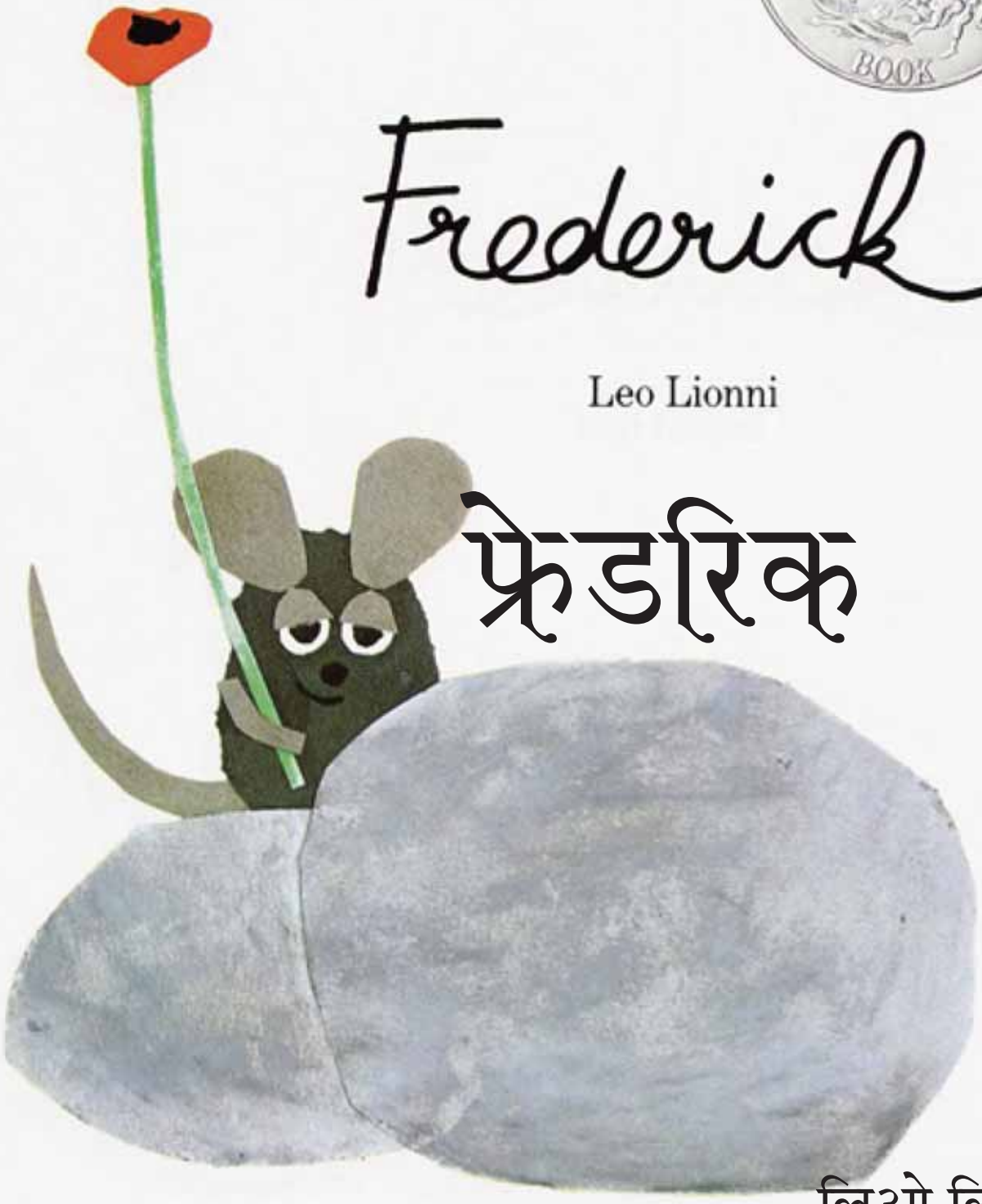

फ्रेडरिक्

लिओ लिओनी

All along the meadow where the cows grazed and the horses ran, there was an old stone wall.

कहीं एक विशाल चरागाह था, जहां गायें चरती थीं और घोड़े कुलांचें भरते थे. चरागाह के एक ओर पत्थर की पुरानी दीवार बनी हुई थी.

In that wall, not far from the barn and the granary, a chatty family of field mice had their home.

खलिहान और अनाज के कोठार के पास से गुजरने वाली इस दीवार की दरारों में गपोड़ी चूहों का एक परिवार घर बनाकर रहता था.

But the farmers had moved away, the barn was abandoned, and the granary stood empty. And since winter was not far off, the little mice began to gather corn and nuts and wheat and straw. They all worked day and night.

मगर यहां रहने वाले किसान तो जाने कबके इस जगह को छोड़कर जा चुके थे. खलिहान उजाड़ पड़ा था और कोठार बिल्कुल खाली. और जाड़े सिर पर देखकर इन छोटे चूहों ने मक्का, बीन व गेहूं के दानों और भूसी को इकट्ठा करना शुरू कर दिया था. वे रात-दिन इसी काम में लगे रहते थे.

All — except Frederick.

सब के सब- बस फ्रेडरिक को छोड़कर.

“Frederick, why don’t you work?” they asked.

‘‘फ्रेडरिक, तुम कोई काम क्यों नहीं करते ?’’ वे पूछते हैं.

"I *do* work," said Frederick.
"I gather sun rays for the cold dark winter days."

''मैं काम कर रहा हूं,'' फ्रेडरिक कहता है.
''मैं जाड़ों के ठंडे अंधेरे दिनों के लिए सूरज की किरणें इकट्ठा कर रहा हूं.''

And when they saw Frederick sitting there, staring at the meadow, they said, "And now, Frederick?"

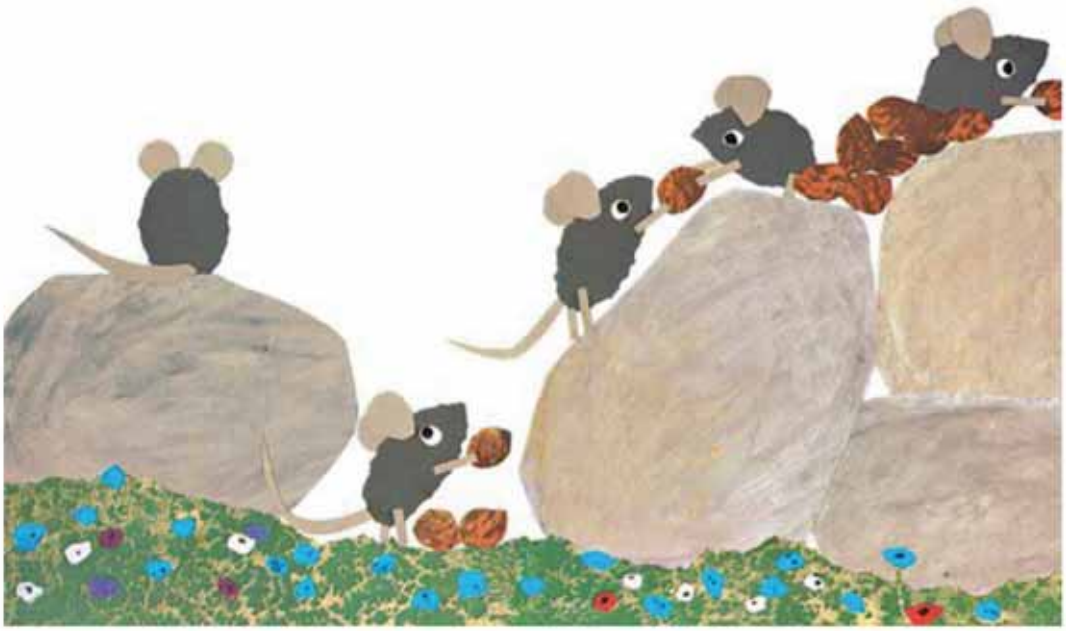

और जब वे फ्रेडरिक को वहां बैठे-बैठे चरागाह को ताकते हुए देखते तो पूछते,
''और अब क्या कर रहे हो फ्रेडरिक ?''

“I gather colors,” answered Frederick simply. “For winter is gray.”

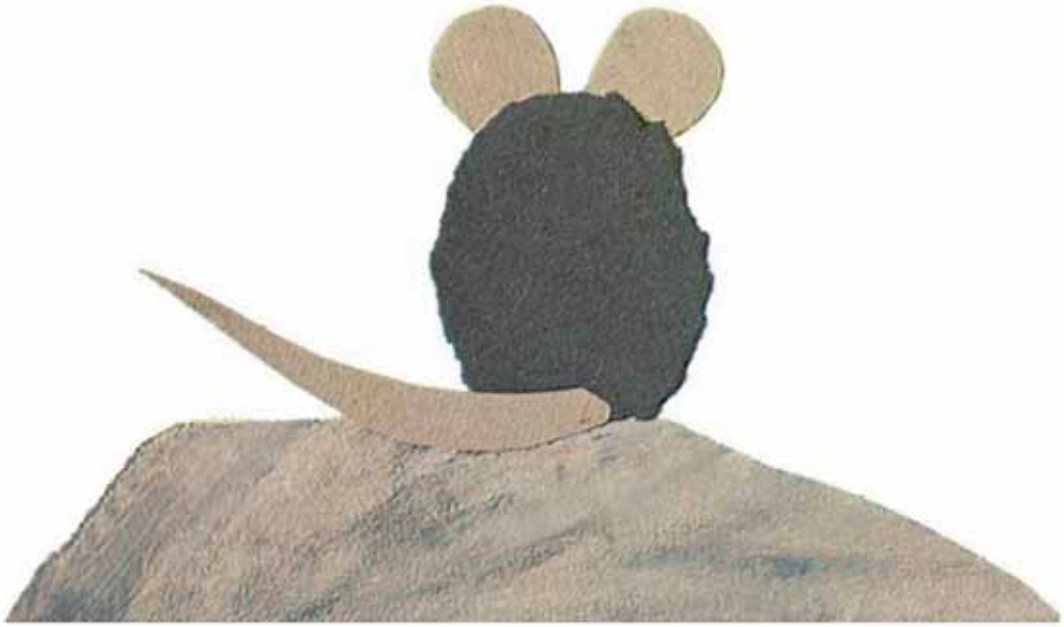

‘‘मैं रंग इकट्ठा कर रहा हूं,’’ फ्रेडरिक कहता, ‘‘जाड़े मटमैले बदरंग होते हैं न!’’

And once Frederick seemed half asleep. “Are you dreaming, Frederick?” they asked reproachfully.

और एक बार जब फ्रेडरिक कुछ उनींदा सा लग रहा था, तो उन्होंने उसे समझाने के अंदाज़ में पूछा, ‘‘क्या तुम सपने देख रहे हो फ्रेडरिक?’’

But Frederick said,
"Oh no, I am gathering words. For the winter days are long and many, and we'll run out of things to say."

लेकिन फ्रेडरिक बोला, ''अरे नहीं, मैं शब्दों को इकट्ठा कर रहा हूं. जाड़े ज्यादा बड़े और लम्बे होते हैं और हमारे पास बताने के लिए बातें कम पड़ जाती है.''

The winter days came, and when the first snow fell
the five little field mice took to their hideout in the stones.

जाड़ों के दिन आ गए और जब पहली बर्फ गिरी तो पांचों छोटे चूहे पत्थरों के बीच अपने बिलों में जा घुसे.

In the beginning there was lots to eat,
and the mice told stories of foolish foxes and silly cats. They were a happy family.

शुरूआती दिनों में खाने को बहुत सारी चीज़ें थीं, और चूहे एक-दूसरे को मूर्ख लोमड़ियों और बेवकूफ बिल्लियों की कहानियां सुना रहे थे. वे सब एक सुखी परिवार की तरह थे.

But little by little they had nibbled up most of the nuts and berries, the straw was gone, and the corn was only a memory.
It was cold in the wall and no one felt like chatting.

लेकिन धीरे-धीरे उनके पास जमा बीज और बेरियां चुकने लगीं. भूसी पहले ही निबट चुकी थी और मक्का तो जैसे यादों में ही बचा था.
दीवार बेहद ठंडी महसूस होती थी और किसी का भी मन गप्पें लड़ाने का नहीं था.

Then they remembered what Frederick had said about sun rays and colors and words.

तब उन्हें फ्रेडरिक की वे बातें याद आईं जिसमें उसने सूरज की किरणों, रंगों और शब्दों को इकट्ठा करने की बात कही थी.

“What about *your* supplies, Frederick?” they asked.

‘‘तुम्हारी जमा की गई चीजों का क्या हुआ फ्रेडरिक ?’’ उन्होंने पूछा.

“Close your eyes,” said Frederick,
as he climbed on a big stone.
“Now I send you the rays of the sun.
Do you feel how their golden glow…”

‘‘अपनी आंखें बंद करो,’’ फ्रेडरिक बोला, और वह एक बड़ी सी चट्टान पर चढ़ गया.
‘‘अब मैं तुम्हारे लिए सूरज की किरणें छोड़ रहा हूं. तुम महसूस कर रहे हो न उनका सुनहरा रंग कैसे चमकता है... ?’’

And as Frederick spoke of the sun
the four little mice began to feel warmer.
Was it Frederick's voice?
Was it magic?

और जैसे ही फ्रेडरिक ने सूरज के बारे में बताना शुरू किया, चारों चूहों को गर्मी का अहसास होने लगा.
क्या यह फ्रेडरिक की आवाज़ थी?
क्या यह जादू था?

"And how about the colors, Frederick?" they asked anxiously. "Close your eyes again," Frederick said.
And when he told them of the blue periwinkles, the red poppies in the yellow wheat, and the green leaves of the berry bush, they saw the colors as clearly as if they had been painted in their minds.

''और उन रंगों का क्या हुआ फ्रेडरिक ?' उन्होंने उत्सुकता से पूछा.
फ्रेडरिक बोला, ''अपनी आंखें बंद करो.''
और जब उसने नीले सदाबहार और लाल पोस्त के फूलों के बारे में और पीले गेहूं के बारे में और बेरियों के झाड़ की हरी पत्तियों के बारे में बताना शुरू किया तो उन्हें ये रंग इतने साफ दिखाई देने लगे जैसे किसी ने उनके दिमाग में पेंट कर दिया हो.

“And the words, Frederick?”
Frederick cleared his throat,
waited a moment, and then,
as if from a stage, he said:

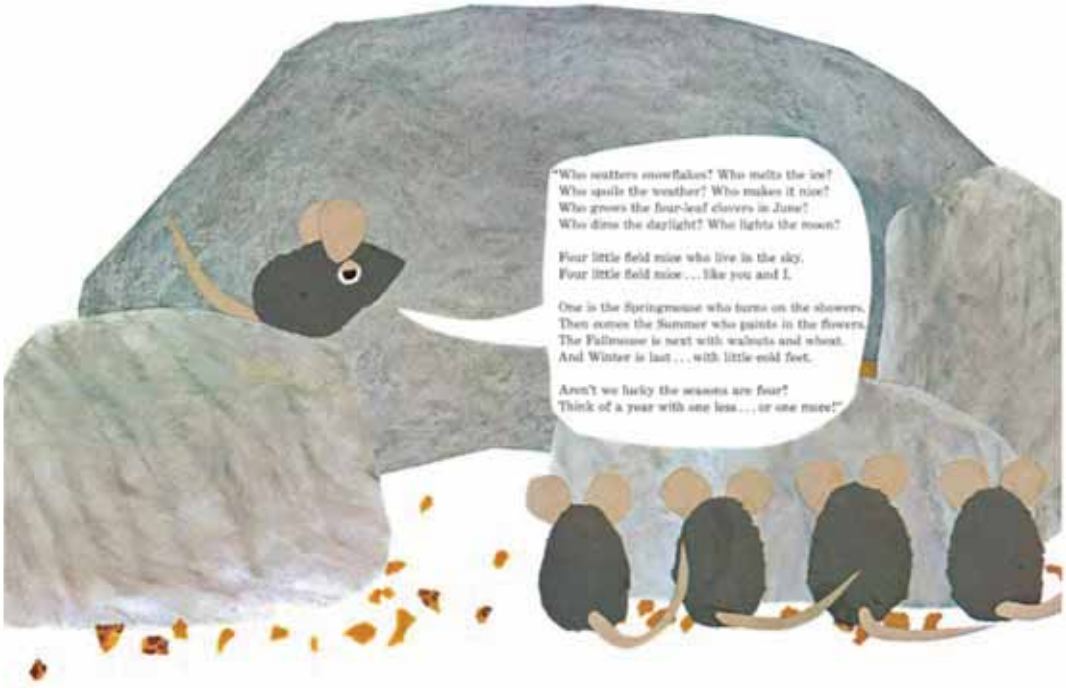

‘‘और वे शब्द कहां हैं फ्रेडरिक ?’’
फ्रेडरिक ने अपना गला खंखारा और कुछ देर रुककर इस तरह बोलने लगा जैसे कि किसी मंच से बोल रहा हो,

"Who scatters snowflakes? Who melts the ice?
Who spoils the weather? Who makes it nice?
Who grows the four-leaf clovers in June?
Who dims the daylight? Who lights the moon?
Four little field mice who live in the sky.
Four little field mice…like you and I.
One is the Springmouse who turns on the showers.
Then comes the Summer who paints in the flowers.
The Fallmouse is next with walnuts and wheat.
And Winter is last…with little cold feet.
Aren't we lucky the seasons are four?
Think of a year with one less…or one more!"

''किसने झाड़े बर्फ़ के फ़ाहे ? किसने इन्हें गलाया ?
मौसम के तेवर तो देखो, कौन इन्हें ले लाया ?
जून माह की कड़ी धूप में किसने घास उगाई ?
कौन डुबाता सूरज का रथ ? चांदनी कैसे आई ?
ऊपर भी आसमान में रहते नटखट चूहे चार
यहां जमीं पर जैसे हम-तुम मौज काटते यार
बासंती चूहे ने थामा बारिश का ये झरना
गर्मी के चूहे के जिम्मे फूलों में रंग भरना
गेहूं औ अखरोट का थैला शरद का चूहा लाता
सबसे पीछे शिशिर का चूहा ठंडे कदम बढ़ाता
चार मौसमों की सौगातें हैं किस्मत वाले हम
क्या होता यदि इनमें कोई मौसम होता कम!''

When Frederick had finished, they all applauded.
"But Frederick," they said, "you are a poet!"

जब फ्रेडरिक ने अपनी बात खत्म की, तो सभी खुशी से चिल्लाए,
''लेकिन फ्रेडरिक तुम मो वाकई एक कवि हो!''

Frederick blushed, took a bow, and said shyly, “I know it.”

फ्रेडरिक शर्माया, थोड़ा झुका और झेंपते हुए बोला, ‘‘मुझे पता है.’’

Leo Lionni wrote and illustrated more than forty highly acclaimed children's books. An internationally known designer, illustrator, graphic artist, and children's book author, he was born in 1910 in Holland and came to the United States in 1939. He received the 1984 American Institute of Graphic Arts Gold Medal, was a four-time Caldecott Honor winner—for *Inch by Inch*, *Frederick*, *Swimmy*, and *Alexander and the Wind-Up Mouse*—and was honored posthumously in 2007 with the Society of Illustrators Lifetime Achievement Award. Leo Lionni died in October 1999 at his home in Tuscany, Italy, at the age of eighty-nine.

लिओ लिओनी ने बच्चों के लिए चालीस से ज्यादा किताबें लिखीं और उनमें चित्र बनाए. वह अंतरराष्ट्रीय स्तर के डिजायनर, चित्रकार, ग्राफिक आर्टिस्ट और बाल साहित्य के रचनाकार हैं. लिओ का जन्म 1910 में हॉलैंड में हुआ था और 1939 में वह अमेरिका आ गए. 1984 में उन्हें अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ ग्राफिक आर्ट्स के स्वर्ण पदक से नवाजा गया. इंच बाई इंच, फ्रेडरिक, स्विमी और अलेक्जेंडर एंड द विंड-अप माउस पुस्तकों पर उन्हें चार बार काल्डकॉट सम्मान दिया गया. इसके अलावा 2007 में उन्हें मृत्योपरांत सोसायटी ऑफ इलस्ट्रेटर लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया. लिओ लिओनी का निधन अक्टूबर 1999 में 89 वर्ष की आयु में इटली के उनके गृहनगर टस्कनी में हुआ.

अनुवादः आशुतोष उपाध्याय